लगभग 2000 कि.ग्रा. या इससे अधिक दूध देती है। कभी-कभी तो यह लगभग 5000 कि.ग्रा. तक दूध देती है।

गिर: गाय की इस किस्म को सूर्ती, देकन और काठियावाड़ी नामों से भी पुकारा जाता है। गिर गाय गुजरात, महाराष्ट्र, राजस्थान और महाराष्ट्र राज्यों में पाई जाती है। यह औसतन लगभग 1700 कि.ग्रा. से अधिक दूध देती है।

सिन्धी: इनका आयात कराची से किया गया था। सिंधी गाय गहरे लाल या भूरे रंग की और मोटे सींग वाली होती है। यह लगभग 1500 कि.ग्रा. दूध का उत्पादन करती है।

देओनी: इसे डोंगरपट्टी के नाम से भी जाना जाता है। यह मुज़्य रूप से उज़र-पश्चिमी क्षेत्रों में पाई जाती है। देओनी गाय लगभग 1000 कि.ग्रा. तक दूध देती है।

करण स्विस: यह साहीवाल और भूरे स्विस की संकर प्रजाति है। ये मुज़्यत: उज़र प्रदेश, आंध्र प्रदेश तथा कर्नाटक में पाई जाती हैं। इसकी अधिक-से-अधिक दुग्ध-उत्पादन क्षमता 3000 कि.ग्रा. तक होती है।

औंगोल: यह प्रजाति आंध्र प्रदेश में पाई जाती है। इसे नेल्लौर के नाम से भी जाना जाता है। यह सामान्यतया उजले रंग की होती है और 1200 से लेकर 2200 कि.ग्रा. तक दुग्ध-उत्पादन करती है।

हराना: दिल्ली और हरियाणा में पाई जाने वाली गाय की एक नस्ल है, जो उजले और हल्के धूसर रंग की होती है। हराना गाय लगभग 1400 कि.ग्रा. तक दूध देती है।

कांकरेज: इसे बन्नाय या नागू नाम से भी जाना जाता है। यह नस्ल राजस्थान और गुजरात में पाई जाती है, इसकी दूध उत्पादन क्षमता लगभग 1330 कि.ग्रा. तक होती है।

थारपारकर: यह नस्ल राजस्थान और गुजरात में पाई जाती है। इसे उजली सिंधी के नाम से भी जाना जाता है। गाय की यह नस्ल लगभग 1500 कि.ग्रा. तक दूध देती है, परंतु कहीं-कहीं 4000 कि.ग्रा. से अधिक दूध देने के मामले भी सामने आए हैं।

भारत में मवेशियों का 42 प्रतिशत भाग बैलों का है। बैलों की मुज़्य किस्में हैं- नागौरी (राजस्थान), बचौर (भागलपुर, मुजज़्फरपुर और चंपारण), मालवी (मध्य प्रदेश), कंटाहा (उज़र प्रदेश), हलीवर और अमृतमहल (कर्नाटक), खिल्लारी (महाराष्ट्र), बार्गर और कंगायम